ISSN 2231-1629 Knowledge Resonance
A Half Yearly National Peer-Reviewed & Indexing with SJIF Impact Factor Research Journal
IMPACT FACTOR 8.072

आंध जनजातियों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन

डॉ. बी. बी. सुरजबन्सी
सहायक प्राध्यापक व विभागप्रमूख
समाजशास्त्र विभाग, मिलिंद कला महाविद्यालय, नागसेनवन, छत्रपती संभाजीनगर

आदिवासी समाज भारतीय समाज व्यवस्था की सांस्कृतिक विशेषता के रूप में जाना जाता है। अपनी अलग जीवनशैली और विशेषताओं के कारण आदिवासी समाज कई समाजशास्त्रियों और मानवशास्त्रियों के अध्ययन का विषय बना है। आदिवासी समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं पर अब तक कई शोध हुए हैं, जिनके माध्यम से अनेक शोधकर्ताओं ने उन्हें समझने का प्रयास किया है। नगरीय सभ्यता से दूर, विशेष भौगोलिक क्षेत्रों में रहने वाले मूल निवासियों को सामान्यतः "आदिवासी" कहा जाता है। जंगलों, दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों और सभ्य समाज से कटे हुए स्थानों पर आदिवासी छोटे-छोटे समूहों में बसते हैं। इनके समाज में नगरीय सभ्यता की भाँति वर्ग-व्यवस्था नहीं पाई जाती, बल्कि इनकी अपनी विशिष्ट परंपराएं और संस्कृतियाँ होती हैं।

जंगलों में निवास करने वाले आदिवासी प्रकृति-पूजक होते हैं। वे वृक्षों, पक्षियों और जानवरों को देवता मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं। अंग्रेजों के भारत आगमन से पहले तक आदिवासी समाज का अलगाव बना रहा, लेकिन अंग्रेजों के आगमन के बाद उनके समाज और संस्कृति में बदलाव आने लगे। हिंदू धर्म के संपर्क में आने के कारण उनका "हिंदूकरण" हुआ और उन्हें "पिछड़े हिंदू" कहा जाने लगा।विश्वभर में आदिवासी समाज को अलग-अलग नामों से जाना जाता है। अमेरिका में उन्हें "रेड इंडियन्स" कहा जाता है, जबकि ऑस्ट्रेलिया में उन्हें "ऐबोरिजिन्स" कहा जाता है। अफ्रीका और एशियाई देशों में उन्हें "आदिवासी" के नाम से पहचाना जाता है। भारत में उन्हें "मूल निवासी" के रूप में जाना जाता है। भारतीय संविधान के अनुसार, देश की विभिन्न आदिवासी जनजातियों को "अनुसूचित जनजाति" के रूप में वर्गीकृत किया गया है। "अनुसूचित" शब्द का प्रयोग औपनिवेशिक काल से होता आ रहा है। आज यूरोप और अफ्रीका में "ट्राइब" शब्द के स्थान पर "इंडिजिनस" अर्थात "देशज" शब्द का प्रयोग किया जाता है। भारत में विशेष रूप से सूचीबद्ध जनजातियों को "अनुसूचित जनजाति" कहा जाता है। कैरियर एल्विन और ठक्कर बाप्पा ने आदिवासियों को "मूल निवासी" कहा है। आदिवासी जंगलों और पर्वतीय क्षेत्रों में रहते हैं, इसलिए उन्हें "वन्य जनजाति" या "गिरिजन" भी कहा जाता है। वास्तव में आदिवासी ही इस देश के वास्तविक मूल निवासी हैं।

2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में आदिवासी जनसंख्या 10.40 करोड़ है, जो देश की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है। भारत में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, गुजरात, राजस्थान, झारखंड, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक राज्यों में आदिवासी जनसंख्या सबसे अधिक पाई जाती है। देश की 83.2 प्रतिशत आदिवासी जनसंख्या इन्हीं राज्यों में निवास करती है।

आदिवासी जनजाति :

आदिवासी जनजातियों के विषय में अलग-अलग विचारकों ने अपनी-अपनी परिभाषाएँ दी हैं। डब्ल्यू जे. पेरी ने आदिवासी समूहों के संदर्भ में कहा है कि विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाले आदिवासी समुदायों की बोली-भाषा समान होती है और वे एक ही क्षेत्र में रहते हैं। उनके अनुसार, "समान बोली बोलने वाले और एक भू-प्रदेश में निवास करने वाले समूह को आदिम समाज कहा जाता है।" गिलीन और गिलीन ने भी आदिवासी समाज की परिभाषा देते हुए कहा है कि, "एक ही विशेष भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाला, समान भाषा बोलने वाला और एक जैसी परंपराओं, रीति-रिवाजों का पालन करने वाला समाज ही आदिवासी कहलाता है।" उनके मतानुसार, आदिवासी जनजातियाँ विशेष भौगोलिक क्षेत्रों में बसती हैं। उनकी भाषा एक समान होती है और उनकी परंपराएँ, रीति-रिवाज, संस्कृति तथा जीवनशैली भी एक जैसी होती हैं।

महाराष्ट्र के आदिवासी :

महाराष्ट्र में निवास करने वाली आदिवासी जनजातियों की जानकारी विशेष महत्त्व रखती है। महाराष्ट्र राज्य का

भौगोलिक क्षेत्रफल 3.07 लाख वर्ग किलोमीटर है, जिसमें से 0.50 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र आदिवासी उपयोजना क्षेत्र के अंतर्गत आता है। महाराष्ट्र की कुल जनसंख्या में से 9.27 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी समाज की है। जनसंख्या के आधार पर यदि देखा जाए, तो भारत में महाराष्ट्र का चौथा स्थान है।

आदिवासी अनुसूचित जाति-जनजाति आदेश संशोधन अधिनियम 1976 के अनुसार महाराष्ट्र में कुल 47 जनजातियाँ पाई जाती हैं। इन अनुसूचित जनजातियों की कई उप-जनजातियाँ भी हैं और उनकी स्वतंत्र बोली-भाषाएँ भी हैं। हजारों वर्ष पहले, शब्दों के निर्माण से पहले, परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग शब्दों और ध्वनियों का प्रयोग करके इन बोली-भाषाओं का जन्म हुआ होगा। आज भी आदिवासी समुदाय अपनी बोली-भाषाएँ बोलते हैं, लेकिन इनमें से कई जनजातियाँ मराठी भाषा का भी प्रयोग करती हैं। उनके दैनिक जीवन के व्यवहार उनकी बोली-भाषा में ही होते हैं, परंतु समय के साथ उनके अन्य स्थानों पर पलायन के कारण अन्य समाजों की भाषाओं का उन पर प्रभाव पड़ा है। इससे उनकी बोली-भाषाओं में भिन्नताएँ देखी जाती हैं। महाराष्ट्र के आदिवासियों की जनजातियाँ विभिन्न स्थानों से आकर बसी होने के कारण उनकी बोलियों में बड़ा अंतर देखने को मिलता है। उनकी बोली-भाषाओं में अन्य भाषाओं का भी मिश्रण हो गया है। चूँकि इन आदिवासी बोलियों की कोई लिपि उपलब्ध नहीं है, इसलिए वे सामान्य रूप से मराठी भाषा का प्रयोग अपनी बोलियों में मिलाकर करते हैं। महाराष्ट्र के अधिकांश आदिवासी मराठी भाषा बोलते हैं।

महाराष्ट्र के आदिवासियों की संस्कृति को संरक्षित करने के लिए सरकार और समाज को विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है। उनकी सांस्कृतिक धरोहर, लोक कलाएँ, गीत, नृत्य और परंपराएँ विलुप्त होती जा रही हैं। इसके संरक्षण के लिए जागरूकता और शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है।"आदिवासी" समुदायों का इतिहास उनकी संघर्षपूर्ण जीवनशैली और आत्मनिर्भरता को दर्शाता है। इन समुदायों का विकास और सशक्तिकरण आज के समय में एक महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है।इस प्रकार, आदिवासी जनजातियाँ भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता का एक अभिन्न अंग हैं। उनका संरक्षण और विकास देश के समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

आंध जनजाति की जनसंख्या

2011 की जनगणना के अनुसार आंध जनजाति की जनसंख्या महाराष्ट्र में सर्वाधिक है। राज्यनिहाय आंकड़ों में आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में भी इनका निवास दिखाई देता है। मध्य प्रदेश में हालांकि आंध जनजाति की जनसंख्या अत्यंत कम है। इसके अलावा, महाराष्ट्र की विभिन्न आदिवासी जनजातियों में आंध जनजाति बहुल है। नाशिक जिले में आदिवासी जनजातियों की संख्या सर्वाधिक है, जबकि यवतमाल और हिंगोली जिलों में आंध जनजाति की जनसंख्या सबसे अधिक पाई जाती है। औरंगाबाद प्रादेशिक विभाग के अंतर्गत मराठवाड़ा क्षेत्र में हिंगोली जिला आंध जनजाति के निवास का प्रमुख केंद्र है।

क्र. 1 - महाराष्ट्रातील आदिवासी जमातीं व आंध जमातीची वास्तव्यनिहाय लोकसंख्या

अ. क्र.	जिला	कुल जनजातीय जनसंख्या			आंध जनजाति जनसंख्या		
		ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल
1	हिंगोली	106739	5215	111954	98821	2423	101244
2	महाराष्ट्र	9006077	1504136	10510213	452345	21765	474110
कुल		18012154	3008272	21020426	904690	43530	948220

स्त्रोत: भारतीय जनगणना 2011

मागील तक्त्यामध्ये आदिवासी और आंध जनजाति की जनसंख्या ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के अनुसार दर्ज की गई है। कुल आदिवासी जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए, मराठवाड़ा के हिंगोली और नांदेड जिलों में आंध जनजाति की जनसंख्या सबसे अधिक पाई जाती है। हिंगोली और यवतमाल ये दो जिले आंध जनजाति बहुल जिले हैं। हिंगोली जिले में आंध जनजाति की महिलाओं की संख्या 49,114 है और पुरुषों की संख्या 52,130 है। इसी प्रकार, यवतमाल जिले में आंध जनजाति की महिलाओं की संख्या 72,643 और पुरुषों की संख्या 76,081 दर्ज की गई है।

2011 की जनगणना के अनुसार, मराठवाड़ा में आंध जनजाति की जनसंख्या का जिला, लिंग और निवास स्थान के अनुसार वर्गीकरण किया गया है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार हिंगोली जिला आंध जनजाति बहुल जिला है।

क्र. 2 - महाराष्ट्र के कूल जनजातीय एवं आंध जनजाति की जनसंख्या

क्र. नं.	जिला	कुल जनजातीय जनसंख्या			आंध जनजाति जनसंख्या		
		पुरुष	स्त्रिया	एकूण	पुरुष	स्त्रिया	एकूण
1	हिंगोली	57,674	54,280	1,11,954	52,130	49,114	1,01,244
2	महाराष्ट्र	53,15,025	51,95,188	1,05,10,213	2,43,300	2,30,810	4,74,110
कुल		1,06,30,050	1,03,90,376	2,10,20,426	4,86,600	4,61,620	9,48,220

वर्तमान आंकड़ों से यह साफ दिखता है कि आंध समुदाय के लगभग 90% लोग ग्रामीण क्षेत्र में रहते हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में उनकी संख्या बहुत कम है। मराठवाड़ा में आंध जमाती की कुल जनसंख्या में हिंगोली और नांदेड जिलों की संख्या सबसे अधिक पाई जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मराठवाड़ा में आंध जमाती की कुल जनसंख्या का 90-95% हिस्सा इन दोनों जिलों में बसा हुआ है। बाकी सभी जिलों में मिलाकर यह आंकड़ा केवल 0.39% है।

आंध समुदाय में महिला

आंध समुदाय महाराष्ट्र में एक महत्वपूर्ण आदिवासी समूह है, जो मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। इनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक स्थिति पर काफी शोध हुआ है, लेकिन इस समुदाय की महिलाओं की स्थिति को लेकर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। आंध महिलाओं का जीवन कृषि कार्य, घरेलू कामकाज और अन्य पारंपरिक कार्यों में व्यस्त रहता है, लेकिन उन्हें सामाजिक और आर्थिक स्तर पर कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

आंध महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए यह जरूरी है कि हम उनकी सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक परंपराओं और रोजगार के अवसरों को ध्यान में रखें। महिलाएं इस समुदाय में कृषि कार्यों में अपने पुरुष साथियों के साथ जुड़ी रहती हैं, लेकिन पारंपरिक रूप से उनकी भूमिका घरेलू होती है। उनका मुख्य कार्य घर की देखभाल, बच्चों की परवरिश और पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाना होता है।

हालांकि, उनके पास आमतौर पर शिक्षा और अन्य सामाजिक सेवाओं तक सीमित पहुंच होती है, जिसके कारण उनका सशक्तिकरण धीमा है। इसके बावजूद, कई आंध महिलाएं अपने परिवारों की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए छोटे-मोटे व्यवसायों में भी शामिल होती हैं। लेकिन इन महिलाओं को आमतौर पर आर्थिक निर्णयों में शामिल नहीं किया जाता और उन्हें अपने अधिकारों के बारे में पूरी जानकारी नहीं होती।

आंध महिलाओं की सामाजिक स्थिति:

आंध महिलाओं को अन्य आदिवासी समुदायों के मुकाबले अधिक सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। वे अपनी जाति, लिंग, और शिक्षा की कमी के कारण सामाजिक स्तर पर पिछड़ी हुई हैं। वे समाज में अपनी पहचान स्थापित करने के लिए कई संघर्षों का सामना करती हैं। इन महिलाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा, और रोजगार के अवसरों में समानता की कमी होती है। कभी-कभी, आंध महिलाओं को शारीरिक और मानसिक शोषण का सामना भी करना पड़ता है, क्योंकि वे समाज में दबे हुए होते हैं और उनके पास अपने अधिकारों को लागू करने के लिए पर्याप्त साधन नहीं होते। इसके अलावा, महिलाओं के लिए शिक्षा की कमी भी एक प्रमुख समस्या है, जिससे वे अपने अधिकारों के बारे में जागरूक नहीं हो पातीं और अपनी स्थिति को सुधारने के लिए आवश्यक कदम नहीं उठा पातीं।

आंध जनजाति की आर्थिक स्थिति

आंध जनजाति महाराष्ट्र के आदिवासी समुदायों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, विशेष रूप से मराठवाड़ा क्षेत्र में। इस जनजाति का जीवन मुख्य रूप से कृषि, वनोपज संकलन और अन्य पारंपरिक कार्यों पर निर्भर है। हालांकि, इस समुदाय की आर्थिक स्थिति में समय के साथ कुछ बदलाव हुए हैं, फिर भी वे प्रमुख रूप से आर्थिक रूप से पिछड़े हुए वर्ग में आते हैं। आइए आंध जनजाति की आर्थिक स्थिति और प्रोफाइल के बारे में विस्तार से समझते हैं:

आधारिक जीविका के साधन - आंध जनजाति का अधिकांश हिस्सा कृषि कार्यों से जुड़ा होता है। पारंपरिक रूप से, यह समुदाय छोटे पैमाने पर कृषि करता है, और

कृषि पर आधारित उनका जीवन निर्वाह होता है। इसके अलावा, वे वनोपज जैसे लकड़ी, फल, और औषधीय पौधों की बटाई भी करते हैं, जो उन्हें अपनी जीविका के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं।

हालांकि, इस समुदाय के पास अक्सर कृषि के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं होते, जैसे कि सिंचाई के साधन, उन्नत बीज, और आधुनिक कृषि उपकरण। इसके कारण, उनकी कृषि उत्पादन क्षमता सीमित रहती है, और वे अधिकतर पारंपरिक तरीकों पर निर्भर रहते हैं।

स्वरोजगार और छोटे व्यवसाय - आंध जनजाति के कुछ लोग छोटे-मोटे व्यवसायों में भी शामिल होते हैं। ये व्यवसाय मुख्य रूप से हस्तशिल्प, कारीगरी, और स्थानीय वस्तुओं की बिक्री से जुड़े होते हैं। वे अक्सर स्थानीय बाजारों में अपने उत्पादों को बेचते हैं, लेकिन इन व्यवसायों से मिलने वाली आय स्थिर नहीं होती, और यह आय जीवन यापन के लिए पर्याप्त नहीं होती। कुछ आंध समुदाय के लोग पशुपालन और दूध उत्पादन के व्यवसाय में भी शामिल होते हैं, लेकिन यह भी अधिकतर छोटे पैमाने पर होता है। इसी प्रकार, अन्य स्वरोजगार जैसे कि बुनाई, मोची का काम, और अन्य कारीगरी भी उनके जीवन का हिस्सा होते हैं, लेकिन इनसे प्राप्त होने वाली आय बहुत सीमित होती है।

श्रमिक वर्ग का हिस्सा - आंध जनजाति के कई लोग श्रमिक वर्ग का हिस्सा होते हैं, जो कृषि, निर्माण कार्यों और अन्य मजदूरी आधारित कार्यों में शामिल होते हैं। यह समुदाय अधिकतर अस्थायी श्रमिक के रूप में काम करता है, और उन्हें अपनी श्रम शक्ति के अनुसार न्यूनतम मजदूरी मिलती है। इस प्रकार, उनके पास रोजगार की स्थिरता और आय के स्थिर स्रोतों की कमी होती है।

आर्थिक पिछड़ापन - आंध जनजाति की आर्थिक स्थिति में प्रमुख कारणों में से एक उनके पास शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण की कमी है। अधिकतर लोग अशिक्षित होते हैं, और शिक्षा के अभाव में उनके लिए अच्छे रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं होते। इसके अतिरिक्त, सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ सही तरीके से नहीं पहुँच पाता, जिससे इस समुदाय के लोग सामाजिक और आर्थिक स्तर पर पिछड़े रहते हैं। इस समुदाय के लोग अक्सर सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ उठाने में असमर्थ होते हैं, क्योंकि वे समाज के मुख्यधारा से कटे हुए होते हैं और जानकारी की कमी होती है। इसके अलावा, आंध जनजाति के लोगों के पास जमीन की कमी और संसाधनों की असमान वितरण भी एक बड़ा आर्थिक मुद्दा है।

राज्य और केंद्र सरकार द्वारा समर्थन - सरकार द्वारा आंध जनजाति के लिए विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जाता है, जैसे कि आदिवासी कल्याण योजनाएं, शिक्षा, स्वास्थ्य, और आवास योजनाएं। हालांकि, इन योजनाओं का कार्यान्वयन विभिन्न कारणों से असफल होता है। कई बार इन योजनाओं का लाभ आंध समुदाय तक नहीं पहुंचता क्योंकि वे दूरदराज के क्षेत्रों में रहते हैं और उन्हें योजनाओं के बारे में सही जानकारी नहीं होती। इसके अलावा, बिचौलियों और स्थानीय भ्रष्टाचार के कारण भी इन योजनाओं का लाभ सही लोगों तक नहीं पहुँचता।

शोधनिबंध का उद्देश्य:

इस शोधनिबंध का मुख्य उद्देश्य आंध आदिवासी महिलाओं की सामाजिक स्थिति और शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना है। इस शोध के माध्यम से आंध आदिवासी महिलाओं की सामाजिक और शैक्षिक स्थिति का गहराई से विश्लेषण किया जाएगा, जिसमें उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखा जाएगा।

संशोधन पद्धति:

यह शोधनिबंध वर्णनात्मक स्वरूप का है और इसमें वर्णनात्मक संरचना का उपयोग किया गया है। इस शोध कार्य के लिए गुणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। यह शोधनिबंध प्राथमिक तथ्यों के संकलन पर आधारित है। इस शोध के लिए कुल 250 नमूनों का चयन किया गया है। गैर-संभाव्यता नमूना चयन विधि के तहत सहेतूक नमूना चयन तकनीक का उपयोग करके एककों का चयन किया गया है।

प्राप्त जानकारी का विश्लेषण:

इस शोध में अध्ययन क्षेत्र की आंध आदिवासी महिलाओं में विवाहित उत्तरदाताओं का चयन अधिक किया गया है। इसके अलावा विधवा, तलाकशुदा, अविवाहित और परित्यक्ता उत्तरदाताओं का भी चयन किया गया है। विशेष रूप से, उन आंध आदिवासी महिलाओं को भी शामिल किया गया है, जिनके परिवार के मुखिया का निधन हो गया हो, या जो तलाकशुदा हैं, या जिनके पतियों ने उन्हें छोड़ दिया है, और जिन पर परिवार की जिम्मेदारी आई है। मुख्यरूप से यहा कुछ

प्रतिनिधीक तथ्यों को सारणी के आधार प्रस्तुत किया है।

क्र. 3 : उत्तरदाताओं का व्यवसाय के अनुरूप प्रस्तुति

श्रेणी / व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत (%)
खेती	45	18
खेती और नोकरी	11	4.4
खेती और मजुर	157	62.8
खेत में काम करणेवाला मजुर एवं जोडधंदा	37	14.8
कुल	250	100

उपरोक्त तालिका में अध्ययन क्षेत्र से संबंधित आंध आदिवासी महिलाओं के व्यवसाय से जुड़ी जानकारी संकलित की गई है। आदिवासी समुदाय को जंगल, दऱयाखोऱ, नदी और गांव के बाहर रहने वाला समुदाय माना जाता है, और इसलिए इस समुदाय की महिलाओं का प्रमुख व्यवसाय क्या है, इस पर ध्यान दिया गया है। इसके परिणामस्वरूप यह स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में से 62.8 प्रतिशत (156) महिलाओं का प्रमुख व्यवसाय कृषि और मजदूरी है। यह व्यवसाय अन्य व्यवसायों के मुकाबले सबसे अधिक है।

इसके बाद, 18 प्रतिशत (45) महिलाओं का प्रमुख व्यवसाय कृषि है, जबकि 14.8 प्रतिशत (37) महिलाओं का प्रमुख व्यवसाय शेतमजूरी और जोड़धंधा है। 4.4 प्रतिशत (11) महिलाओं का प्रमुख व्यवसाय कृषि और नौकरी है।

इससे यह साफ होता है कि, अधिकांश उत्तरदाताओं का प्रमुख व्यवसाय कृषि और मजदूरी है, उसके बाद कृषि का व्यवसाय है। कुछ उत्तरदाताओं का प्रमुख व्यवसाय "शेतमजूरी और जोड़धंधा" और "कृषि और नौकरी" है, जो कि कम प्रतिशत में है। कुल मिलाकर, आंध आदिवासी महिलाओं का प्रमुख व्यवसाय कृषि और मजदूरी, कृषि, शेतमजूरी और जोड़धंधा है, जबकि कुछ अपवाद स्वरूप महिलाएं कृषि और नौकरी करती हैं, लेकिन उनका प्रतिशत कम है।

क्र. 4 - वैवाहिक दर्जा के अनुसार परिवार में उत्तरदातांओं का निर्णय प्रक्रिया में सहभागीता

अ. क्र.	निर्णय प्रक्रिया में सहभागीता का स्वरूप	वैवाहिक स्तर					
		अविवाहीत	विवाहीत	विधवा	तलाकशुदा	परितक्त्या	कूल
1	कभी भी नहीं	0	10	0	0	1	11
2	कभी-कभी	1	76	5	2	0	84
3	हमेशा	4	126	10	7	2	149
4	उत्तर नहीं दे सके	0	5	1	0	0	6
कूल		5	217	16	9	3	250

आधिकारिक रूप से विभिन्न क्षेत्रों में स्थितियों का विश्लेषण करने के लिए यह शोध कार्य किया गया है। इस कार्य में विभिन्न विषयों के बारे में जानकारी एकत्रित की गई है, जिनमें प्रमुख व्यवसाय, रोजगार की स्थिति, शिक्षा स्तर, और सामाजिक-आर्थिक स्थिति शामिल हैं। विशेष रूप से यह शोध आंध आदिवासी समुदाय की महिलाओं पर केंद्रित है, जिनके द्वारा किए गए प्रमुख व्यवसायों और उनके सामाजिक-आर्थिक विकास की जांच की गई है।

उपरोक्त तालिका पारिवारिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में राय पर विचार करने के संबंध में उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति के सहसंबंध को दर्शाती है। कुल उत्तरदाताओं में से 149 उत्तरदाताओं ने संकेत दिया कि वे पारिवारिक निर्णयों में हमेशा राय पर विचार करते हैं। ऐसे उत्तरदाताओं की संख्या सबसे अधिक है और अधिकांश उत्तरदाता विवाहित हैं, जबकि ऐसे उत्तरदाताओं की संख्या जो इंगित करते हैं कि वे कभी-कभी पारिवारिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में वोट लेते हैं, 84 है और विवाहित उत्तरदाताओं की संख्या अधिक है, जबकि 11 उत्तरदाताओं ने संकेत दिया कि वे पारिवारिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में कभी वोट नहीं लेते हैं।

उपरोक्त विश्लेषण से सिद्ध होता है कि उत्तरदाताओं में नेत्रहीन आदिवासी महिलाओं की संख्या अधिक है, जो कहते हैं कि पारिवारिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी राय को ध्यान में रखा जाता है। यह विवाहित, विधवा, तलाकशुदा, तलाकशुदा महिलाओं की राय को ध्यान में रखता है; लेकिन कुछ विवाहित स्थिति के बावजूद, पारिवारिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी

राय पर विचार नहीं किया जाता है। लेकिन इसकी मात्रा कम है।पारिवारिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में परिवार के प्रत्येक सदस्य का अधिकार है। अपनी राय व्यक्त करने के लिए; लेकिन ऐसा लगता है कि कुछ परिवारों में उस राय पर विचार नहीं किया जाता। परिवार विकास यदि प्रत्येक सदस्य की राय को ध्यान में रखा जाए तो परिवार के विकास को बढ़ावा मिलता है।

निर्वचण और निष्कर्ष

1. आंध आदिवासी महिलाओं के भौतिक संसाधनों में साइकिल, बाज़ और मोबाइल फोन अधिक हैं। यह भी देखा जाता है कि जीवन के लिए आवश्यक भौतिक उपकरण भी होते हैं।
2. अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश उत्तरदाताओं के परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अच्छे संबंध हैं, जबकि कुछ उत्तरदाताओं के संबंध सामान्य हैं और केवल थोड़ा सा तनाव है।
3. कुल उत्तरदाताओं में से 30.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में वित्तीय समस्या सबसे अधिक है। इसमें पारिवारिक समस्याएँ या मानसिक तनाव, परिवार के किसी सदस्य की शराब की लत, परिवार में वाद-विवाद, सामाजिक समस्याएँ, पुरानी बीमारियाँ जैसी समस्याएँ देखी जाती हैं।
4. यह प्रमाणित है कि स्वा आंध आदिवासी समाज में बेटी से बेटे को दहेज देने की प्रथा है। दहेज का स्वरूप "सोने और धन के रूप में, नकदी के रूप में" पाया गया।
5. कुल उत्तरदाताओं में से 60.8 प्रतिशत ने कहा कि 21वीं सदी में महिलाओं की स्थिति में सुधार हो रहा है। इस बात से पूरी तरह सहमत उत्तरदाताओं का अनुपात अधिक दिखाई देता है।
6. आंध आदिवासी महिलाओं के साथ महिलाओं परिवार में समानता और श्रेष्ठता प्रदान करता है।
7. अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश उत्तरदाताओं को अपने पारिवारिक जीवन में दुर्व्यवहार का अनुभव नहीं होता है; परन्तु कुछ आंशिक उत्तरदाताओं को सामना करना पड़ता है। उन्हें मानसिक यातना, आर्थिक यातना, शारीरिक यातना, यौन यातना का सामना करना पड़ता है।
8. 246 उत्तरदाताओं ने "महिलाओं के लिए शिक्षा आवश्यक है" पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। जब आयु समूह के साथ सहसंबंध को ध्यान में रखा गया, तो सभी आयु समूहों के उत्तरदाताओं ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है।
9. यह पाया गया कि आंध आदिवासी परिवारों की कम वार्षिक आय के कारण महिलाएं शिक्षा से बाहर हो गईं।
10. यह पाया गया कि आंध आदिवासी महिलाओं को आंशिक रूप से परिवार की खराब वित्तीय स्थिति के कारण शिक्षा छोड़नी पड़ी, जबकि कुछ को पारिवारिक जिम्मेदारियों और बच्चे के पालन-पोषण के कारण शिक्षा छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।
11. आंध आदिवासी जनजाति में एक महिला के रूप में शिक्षा में आने वाली कठिनाइयों में पारिवारिक कार्य, पारिवारिक विरोध, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, परिवार के प्रति समाज की नकारात्मक मानसिकता, सामाजिक असुरक्षा, गरीबी और पिछड़ापन आदि शामिल हैं।
12. अध्ययन क्षेत्र में आंध आदिवासी महिलाओं के परिवारों के बच्चों के स्कूल छोड़ने के कारणों में गरीबी और पिछड़ापन, गृहकार्य में योगदान, कृषि कार्य में योगदान, विवाह के कारण स्कूल छोड़ना और प्रवासन शामिल हैं।

सुझाव -

1. आंध महिलाओं के लिए शिक्षा की सुविधाओं का विस्तार करना अत्यंत आवश्यक है। यह न केवल उन्हें सशक्त बनाएगा, बल्कि उनके जीवन के कई पहलुओं को सुधारने में मदद करेगा। महिलाओं को शिक्षा देने से उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव आएगा, जो उन्हें समाज में बेहतर स्थान दिलाएगा।
2. आंध महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाने में भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अधिकतर महिलाएं सुरक्षित प्रसव और बेहतर स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं से वंचित हैं। अगर इन्हें प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता और गुणवत्ता बढ़ाने के उपाय मिलें तो उनकी स्थिति में सुधार हो सकता है।
3. महिलाएं पारंपरिक कार्यों में शामिल होती हैं, लेकिन उन्हें अपने कार्य के अनुसार उचित वेतन और सम्मान नहीं मिलता। महिलाओं को स्वरोजगार के अवसरों के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि वे अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधार सकें और आत्मनिर्भर हो सकें।

4. आंध समुदाय की महिलाओं को सामाजिक न्याय और अधिकारों का संरक्षण मिलना चाहिए। सरकारी योजनाओं का लाभ उन्हें समान रूप से मिले, ताकि वे अपनी आवाज उठा सकें और समाज में अपनी स्थिति को बेहतर बना सकें।
5. आंध समुदाय की महिलाओं को मुख्यधारा में लाने के लिए उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। इसके अलावा, सामाजिक न्याय और महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए सरकारी स्तर पर अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।
6. आंध जनजाति की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए सतत प्रयास और योजनाओं का सही तरीके से क्रियान्वयन किया जाना चाहिए, ताकि इस समुदाय को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सके।
7. आंध जनजाति के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए सरकारी स्कूलों का विस्तार और बेहतर शिक्षण सामग्री की आवश्यकता है।
8. उन्हें छोटे व्यवसायों, कृषि उपकरणों, और व्यवसायिक प्रशिक्षण में सहायता प्रदान की जानी चाहिए, ताकि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें।
9. इस समुदाय को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराई जानी चाहिए, ताकि उनकी कार्य क्षमता में वृद्धि हो सके और जीवन स्तर बेहतर हो।
10. सरकारी योजनाओं का सही तरीके से कार्यान्वयन करके इस समुदाय तक लाभ पहुंचाना जरूरी है।

इसतरह प्रस्तुत शोधनिबंध के माध्यम से आंध आदिवासी महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक स्तर का अध्ययन किया गया है।

संदर्भ सूची

- *Indian Census Report - 2011*
- *Gautam, A. (2016). The Hinduization of Tribals of Jharkhand: An Outline since Beginning. Anthropology. Vol. 4. Issue 1. Page No.159.*
- *Mitra, Aparna. (2008). The status of women among the scheduled tribes in India. The Journal of Socio-Economics.Vol. 37. Issue 3. Page No. 1202-1217.*
- *Peters, Michael A.; Mika, Carl T. (10 November 2017). "Aborigine, Indian, Indigenous or First Nations?". Educational Philosophy and Theory. 49 (13): 1229–1234.*
- *OED Online. (September 2016). "Indigene, adj. and n.". Oxford University Press. Web. 22 November 2016.*
- *Tewari, Saagar. (2017). Debating Tribe and Nation: Hutton, Thakkar, Ambedkar, and Elwin (1920s-1940s). NMML Occasional Paper History and Society New Series 86. New Delhi: Nehru Memorial Museum and Library.*
- *Pathi, Jaganath. (1984). Tribal Peasantry: Dynamics of Development. New Delhi: Inter-India Publication. Page No. 22.*